प्रयोजन मूलक हिन्दी

— वह हिन्दी जो हमारे दैनिक काम-काज में प्रयुक्त होती है, अथवा बोलचाल के रूप में या लिखितरूप से व्यवहार में प्रयुक्त होती है उसे प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं। प्रयोजनमूलक हिन्दी किसी खास प्रयोजन (योजना) के लिए किया जाय वह प्रयोगन मूलक हिन्दी कहलाती है।

(i) मोटरि सत्यनारायण के अनुसार "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लायी जाने वाली हिन्दी ही प्रयोजनमूलक हिन्दी है"

(ii) डॉ० प्रभात के अनुसार "कामकाजी भाषा सम्प्रत्यय आधार बनती है वह अनुभव का अंश निकाल देती है अतः वहाँ पर तथ्य और सिद्धांत ही रह जाती है। कामकाजी भाषा सम्प्रत्यय तथा सिद्धांत के समन्वय के साथ परिणामोन्मुखी काम करती है, प्रयोजनमूलक हिन्दी कहलाती है।"

(iii) डॉ० विनोदगोदरे — "जीवन जगत की विभिन्न आवश्यकताओं अथवा लोकव्यवहार, उच्च शिक्षा तथा जीविकोपार्जन आदि के लिए विशेष अभ्यास ज्ञान के द्वारा विशेष शब्दावली में, विशेष अभिव्यक्ति इकाईयों एवं सम्प्रेषण कौशल से समाज सापेक्ष व्याकरण भाषा प्रयुक्तियों को प्रयोजन हिन्दी कहा जा सकता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार स्पष्ट होता है कि प्रयोजन मूलक हिन्दी

सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रों में सुचारु से व्यवहारिक के लिए प्रयुक्त भाषा रूप है। वह दैनिक सामान्य भाषा व्यवहार से तथा कलात्मक भाषा व्यवहार से पृथक है।

यह एक ऐसी भाषा है जिसका प्रयोग हम विभिन्न आवश्यकताओं और लोकजीवन में व्यवहृत विशेष शब्दावली के माध्यम से भाषिक - सम्प्रेषण और समाज - सापेक्ष व्यावहारिक प्रयोजनों की सम्पूर्ति के लिए करते हैं।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूपों का आधार उनका प्रयोग क्षेत्र होता है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दीभाषा के प्रयोजनमूलक रूपों का संतोषप्रद विकास एवं विस्तार हुआ है। हिन्दी सिर्फ सृजनात्मक साहित्य लेखन की भाषा नहीं है बल्कि आधुनिक विषयों तथा ज्ञान - विज्ञान विविध क्षेत्रों में भी उसका प्रयोग हो रहा है। वास्तव में राष्ट्रीय विकास के लिए भाषा के साहित्यिक एवं साहित्येतर दोनों पक्षों की आवश्यकता है। आधुनिक युग की आवश्यकताएँ प्रयोजनमूलक भाषा रूपों का निर्धारक तत्व है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिन्दी का क्षेत्र विशाल एवं बहुआयामी है। विनोद गोदरे के शब्दों में — "प्रयोजनमूलक हिन्दी एक ओर केन्द्र - व राज्य शासन के पत्र - व्यवहार, विधान मंडल की कार्यवाही, संसदीय विधियाँ, कार्यालयीन पत्राचार, सरकारी संकल्पों, अधिसूचना, प्रेस विज्ञप्तियो, आयोग, समितियों अभिकरण मसौदे, निविदा फार्मस, लाइसेंस, परमिट वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली, विधि, बैंक सेवा तथा डाकघर आदि में प्रयुक्त होती है और दूसरी ओर व्यावसायिक पत्रों, विज्ञापनों की रंगीन

दृश्य-श्राव्य माध्यमों आदि में शब्द की भूमिका निभाती है। इनके अलावा जीविकोपार्जन में सेवा-माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषा के विविध आयाम प्रयोजनमूलक हिन्दी के व्यापक व्यवहार क्षेत्र की ओर संकेत करते हैं।"

प्रयोजनमूलक हिन्दी शैक्षणिक आवश्यकता से उत्पन्न एक शैक्षिक संकल्पना है। यह इस समय देश में चल रहे विशुद्ध साहित्यिक हिन्दी-शिक्षण को एकांगिता छोड़ दे सकता है और हिन्दी शिक्षण को वास्तविक सार्थकता प्रदान कर सकता है। प्रचलित शिक्षा-व्यवस्था में हिन्दी-शिक्षण को उबारने के लिए जहाँ प्रयोजनमूलक हिन्दी को एक नया नाम के रूप में स्वीकार किया जा सकता है

प्रयोजनमूलक हिन्दी के निम्न तत्व द्रष्टव्य है — प्रयोजनतत्व

1. जीवनानुपयोगी —
2. जीविकोपार्जन में सहायक —
3. लोकव्यवहार में उपयोग —
4. विकास में सहायक —
5. शैक्षणिक दृष्टि से मजबूत —
6. नया समाज की स्थापना —

प्रयोजनमूलक हिन्दी के समर्थक विद्वान — 1. विनोद गोदरे
2. दंगल झाल्टे
3. डा० महेन्द्र मितल
4. अनिल कुमार तिवारी

बलराम कुमार